

--	--	--	--	--	--	--	--

Sl. No.: 100809

132(P)

(March, 2019)

Time : 3 Hours]

[Maximum Marks : 100

विभाग - A

1. नीचेना गद्यभंडोमांथी कोईपक्ष या गद्यभंडोनुं भाषांतर करो. [20]

- i) अत्थि उज्जेणी नाम नयरी । तत्थ विक्कमाइच्चो राया । सो विक्कमकंत - सयल - नरिंदो, सुवन्न - पुरिस - सिद्धि - सुत्थीकय - उत्थि - विंदो सयल - कलापंत पगरिसो विविह दिव्य - सत्ति जणिय - जणुक्करिसो कयाइ चितितुं पयत्तो - 'मज्झ सेनाइं पि इक्कं पर-पुर-प्पवेसं जाणेति, अहं पुण दुइज्जं तं जाणिउमिच्छामि ।
- ii) भणमाणेणावयासिया । एवं च कए गुरु - कोण - फुरफुरायमाणाहु राए भणियं च तीए 'अव्वो माए इमिणा दुज्जीनी - सत्थेणं कवड-पंडिय-जड-पंडय-सरिसेणं इमस्स अणाय सील सहावस्स अहियस्स अवयासणं दुवावियं' ति भणमाणी परहुत्ता संठियं' ति ।
तत्तो ताहिं भणियं -
'मा सुयणु कुप्पसु तुमं, किं किरउ एस एरिसो च्ये । णिक्करुणो होइ फुडं, मयण - महाधम्म - ववहारो' ।
- iii) नंद-मणुस्सा य चोरियाए जीवंति । देसं अभिहुवंति । चाणक्को अन्नं उग्गतं चोरग्गाहं मग्गइ । गओ नयर - बाहिरियं । दिट्ठो तत्थ नलदामो कुविंदो । पुत्तय डसणामरिसिओ खणिरुण बिलं जलण पज्जालेण मूलाओ उच्छायंतो मक्कोडए । तओ 'सोहणो एस चोरग्गाहो ति वाहराविओ । सम्माजिरुण य दिण्णं तस्स आरक्खं । तेण चोरा भत्त - डाणाइणा - कओथयारा वीसत्था सत्त्वे सकुडुंवा वावाइया । जायं निक्कटयं रज्जं ।
- iv) 'गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं सुक्कं तुंबं निच्छदं निरुथहयं दब्भेहि य कुसेहि य वेदेहि य मट्टिया लेवेणं लिंपइ य उण्हे दलयइ य सुक्कं समाणं दोच्चं पि दुब्भेहि य कुसेहि य वेदेइ य मट्टिया लेवेणं लिंपइ य उण्हे दलयइ य सुक्के समाणं तच्चं पि दब्भेहि य कुसेहि य वेदेइ मट्टिया लेवेणं लिंपइ । एवं खलु एएणं उवाएणं रत्त - रत्त वेदेमाणे अंतरा लिप्पमाणे अंतरा सुक्कावेमाणे जाव अट्टहिं मट्टिया लेवेहिं अलिपेइ य अत्थाहमतारम पोरिसियसिं उदगंसि पविखवेज्जा ।
- v) तए णं से सहालपुत्ते अन्नया कयाइ - वायाहययं कोलालभंडं अंतो सालाहिंतो बहिया नीणेइ, रत्ता आयवंसि दलयइ । तए णं समणे भग्गं महावीरे सहालपुत्तं एवं

वयासी - सहालपुत्ता ! एस णं कोलालभंडं कओ? तए णं सहालपुत्ते एवं वयासी -
एस णं भंते ! पुविच्चं मट्टिया आसी, तओ पच्छा उदएणं निमिज्जइ, रत्ता छारेण य
करिसेण य एगयओ मीसिज्जइ, रत्ता चक्के आरोहिज्जइ, तओ बहवे करगा य जाव
उट्टियाओ य कज्जंति ।

विभाग - B

2. नीयेना पद्यभंडोमांथी थार पद्योनुं भाषांतर करो.

[20]

- i) सुयणो ण कुप्पइ च्चिअ, अह कुप्पइ विप्पिअं ण चिंतेइ ।
अह चिंतेइ ण जंपइ अह जंपइ लज्जिओ होइ ॥
सूरो वि ण सत्तासो सोभो वि कलंक-वज्जिओ निच्चं ।
भाई वि न दोजीहो तुंगो वि समीव-दिण्ण-फलो ॥
- ii) पत्तो अ सो वणगओ आरुसिओ तिल दुमं समंतेण ।
परिभमइ गुलगुलित्तो कुलालचक्क व्व आइट्टो ॥
विणअ गुणो दंडाडंबरो अ मंडति जह णरिंद-सिरी ।
तह टंकारो महरत्तण च वाअं पसाहेति ॥
- iii) उग्गाहिइ राम तुमं, गुणे गणेऊण पुरिसमइओ त्ति जणो ।
गलिअमहिलासहावं, संभरिऊण अ ममं णिअत्तिहिइ कहं ॥
जह न ते पिअं दुक्खं, जाणिअ एमेव सव्वजीवाणं ।
सव्वायरमुवउत्तो, अत्तोवम्मेण कुणसु दयं ॥
- iv) धिरत्थु ते जसोकामी जा तं जीवियकारणा ।
वंतं इच्छसि आवेउं सेयं ते मरणं भवे ॥
कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं चउत्थं अज्झतदोसा ।
एयाणि वंता अरहा महेसी, ण कुव्वई याव न कारवेइ ॥
- v) मा जम्मंतरि वि मह भारिय होज्ज एह असुहत्थिय कारिय ।
इय एरिस पणिहाणु करेविणु, भंजिउ ते अप्पाणु पडेविणु ॥
विज्जंति परुप्पर तरु लिहंति, कंटगग तिक्खते णहु गणंति ।
तणु दिज्जह रसियह रसह लोहि, ण हु पाउं गणिज्जइ पिम्म मोहि ॥

विभाग - C

3. (A) नीयेना पारिभाषिक शब्दोमांथी कोईपद्य थार शब्दो पर नोंध लप्पो.

[12]

- 1) निव्वाणवादीण
- 2) गोसालमंखलिपुत्त
- 3) कुसुमाउह
- 4) सुक्कज्झाण
- 5) चउरावेया

(B) नीयेना शब्दोना स्वर-व्यंजन विकार व्याकरणनी दृष्टिअे समजावो.

(कोईपण थार)

[4]

- | | |
|---------|--------|
| 1) सयल | 2) मेह |
| 3) गोरव | 4) पिय |
| 5) मज्झ | |

(C) नीयेनामांथी कोईपण थार समासोना इक्त नाम आपो.

[4]

- | | |
|-------------|------------|
| 1) रसपुण्णं | 2) कुंभगार |
| 3) चन्दमुहं | 4) सफलं |
| 5) जीवाजीव | |

विभाग - D

4. (A) नीयेना रूपो व्याकरणनी दृष्टिअे समजावो. (कोईपण आठ)

[8]

- | | | |
|-------------|------------|--------------|
| 1) पुरिसस्स | 2) गच्छउ | 3) पढिस्संति |
| 4) हसीअ | 5) तुम्हाण | 6) पासित्थ |
| 7) वन्दसि | 8) भणिरुणं | 9) सुणिहिमो |

(B) नीये आपेला वाक्योमां कौंसमां आपेल शब्दनुं योग्यरूप आपी ञाली जग्या पूरो अने वाक्य इरीथी लभो.

[12]

- i) परिणमइ विसत्तेणं दिन्नं दुद्धं पि । (सप्प)
- ii) मा मा एत्थ पियसहि एक्कलियं वण-मइ-व्व । (मुंच)
- iii) अरे णव परिणीओ त्व ! ता नियय-भज्जं । (दंस)
- iv) तत्तो खारसित्ते पएसे छित्ता सारिया आरद्धा । (रस)
- v) अघवा हत्थे कंकण किं । (दप्पण)
- vi) सुपुरिसाणं हिअआइ महातरुणं व । (सिहर)
- vii) सहि कुक्कुड वुत्तंतं मह कह । (मूल)
- viii) णिअआए वाआए जे एंति पसेसं ते जअंति । (महाकइ)
- ix) सव्वे जीवा पि इच्छंति । (जीव)
- x) सुयणु न ते पीडा । (भव)
- xi) व देवाणं महाणुभावे से मुणी कासवे । (इंद)
- xii) गयउ सिसिस वण-दिण । (दह)

विभाग - E

5. (A) नीचेना गद्य-पद्य भंडोमांथी कोईपक्ष बेनुं भाषांतर करो.

[10]

- i) तेण कालेण तेण समएण कम्पिल्लपुरे नाम नयरे होत्था । तस्स कम्पिल्लपुरस्स नयरस्स बहिया सहस्सम्बवणे नामं उज्जाणि । तत्थणं कम्पिल्लपुरे कुंडकोलिए नाम गाहावई परिवसइ - अड्ड - दित्ते अप्रिभूए । तस्स णं कुंडकोलियस्स पूसाणामं भारिया होत्था, कुंडकोलिएण गाहावइणा सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठा पच्चविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ ।
- ii) पणमिऊण सेट्ठी निविट्ठो समीवे । पुट्ठो से सेट्ठिणा ववहार सरुवं । कहियं तेण सव्वं । अन्नं च तुहाएसेण गओ कयंगलाए नयरीए । जाओ मे जिणदत्त सेट्ठिणा समं ववहारो । निर्मतिओ अहं तेण भोयणत्थं, दिट्ठामए तग्गिहे चंदकंतेण वयणेण पउमराएहिं हत्थि पाएहिं पवालेण अहरेण दिप्पमाणे रयणेहिं सुवण्णेण अंगेज मयण महाराय भंडार मंजुसा च संचारिणी - एगा कन्नगा ।
- iii) चित्तिज्जइ जं न मणे, जुत्तिवियारेण जुज्जइ न जं च ।
ते पि हयासो एसो सुहमसुहं वा विही कुणई ॥
अवमाणिया वि जे नियगेहं पि न चयंति हीणमाणधणा ।
अभिमानगुण विहूणा साणसमाण व्व ते नियमा ॥

(B) नीचेना सुभाषितोमांथी कोईपक्ष बेनो अर्थ-विस्तार करो.

[10]

- i) न य गेहम्मि पलित्ते कूवो खम्मइ सुतूरमाणेहिं ।
घाहाविए ण दम्मइ आसो च्चिय तक्खणं चेव ॥
- ii) वच्चइ जहिं जहिं चिय भोगपिवासाए विणडिओ पुरिसो ।
पावइ तहिं तहिं चिय पुण्णेहिं विणा पर किलेसं ॥
- iii) न वि जुद्धं न पलायं कयेतहत्थिम्मि अग्घइ भयं वा ।
न य से दीसइ हत्थो गेण्हइ य दढं अमोक्खो य ॥
- iv) भूसणरहिया वि सई तीए सीलं तुं मंडणं होइ ।
सील विहूणाए पुणो वरं खु मरणं महिलियाए ॥

